

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
 स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥
 जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
 स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥
 निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
 समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३ ॥
 सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
 निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४ ॥
 निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।
 चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५ ॥
 भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
 गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६ ॥
 महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
 परं ब्रह्मसद्वापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७ ॥
 शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
 विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८ ॥
 रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यम्
 व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।
 विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्
 सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री-व्यासविरचितं श्री-रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

<http://stotrasamhita.net/wiki/Ramashtakam>.

generated on February 28, 2025

Downloaded from <http://stotrasamhita.github.io> | StotraSamhita | Credits